D.B. College, Jainagar
Madhubani (Bihar)

Dr./Km. Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
Department of Philosophy

INDIAN PHILOSOPHY
B.A. Part – I

Date Dec 4th, 2020
Lecturer (H & S) 3, 4

भारतीय दर्शन का परिचय – II

भारत में दर्शनशास्त्र ज्ञान की उस विद्या को कहा जाता है जिसके द्वारा तत्व का साक्षात्कार किया जा सके। भारतीय दार्शनिक केवल तत्व की बौद्धिक व्याख्या से संतुष्ट नहीं होते बल्कि वे इस तत्व की अनुभूति भी प्राप्त करना चाहते हैं। भारत में प्राचीन काल से ही दर्शनशास्त्र ज्ञान की एक स्वतंत्र शाखा के रूप में प्रतिष्ठित रहा है और अन्य विज्ञानों को तार्किक आधार प्रदान करके उनका मार्गदर्शन करता रहा है।

मुण्डकोपनिषद् में दर्शनशास्त्र को ब्रह्मविद्या कह कर अन्य सब विज्ञानों का आधार और सर्वविद्याप्रतिष्ठापक कहा गया है। कौटिल्य का भी कथन है कि आन्वीक्षिकी (दर्शनशास्त्र) सभी विषयों के लिए प्रदीप का कार्य करता है। यह सभी कार्यों का साधक और सभी कर्तव्य-कर्मों का मार्गदर्शक है।

भारतीय दर्शन में युक्तिपूर्वक तत्व को जानने का, विश्व के उद्भव और विकास को समझने का प्रयास दिखाई देता है। इसमें ज्ञानमीमांसा और आचारमीमांसा है तथा दर्शनशास्त्र की अन्य शाखाएँ भी हैं। इस प्रकार भारतीय दर्शनशास्त्र में विचारों की विविधता दिखाई देती है। विचार का ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं है जिसे इस शास्त्र ने स्पर्श न किया हो। यह भी उल्लेखनीय है कि भारतीय दर्शन कभी भी रूढ़िवादी नहीं रहा। भारतीय दार्शनिक कभी भी किसी भी अपरिवर्तनीय सिद्धांत से चिपके नहीं रहे। वे देश-काल-परिस्थितिजन्य आवश्यकताओं के अनुरूप अपने सिद्धांतों में परिवर्तन एवं संशोधन करते रहे हैं। परिणामतः भारत में दर्शन का सदैव जीवन से निकट सम्बन्ध बना रहा है।

Scanned with CamScanner